हिंसा क्या है?

आमतौर पर किसी भी तरह की मार-पीट, चोट पहुंचाने को हम हिंसा कहते हैं। हर कोई हिंसा से डरता है। हिंसा से शरीर को चोट लगती है। दर्द होता है। कभी-कभी हिंसा से शरीर के साथ मन को भी चोट लगती है। किसी की डांट से बिना शरीर को चोट पहुंचे भी मन को बहुत दुख होता है।

इस तरह से हमें पता लगता है कि हिंसा शरीर को नुकसान पहुंचाती है। इससे अपमान और बेइज्जती होती है। हिंसा के डर से भी लोग डरते हैं यानि जिस काम के करने से मार-पीट या डांट का डर हो वह करने से घबराते हैं।

औरतों के खिलाफ़ हिंसा

औरतों के खिलाफ़ जीवन से मरण तक हिंसा होती है। यह बात ठीक है कि समाज में पुरुष भी हिंसा के शिकार होते हैं। लेकिन खास बात यह है कि हिंसा के कई ऐसे रूप हैं जो सिर्फ औरतों के साथ होते हैं। मर्दों के साथ नहीं।

हिंसा को हम कई तरह से बांट कर देख सकते हैं। शारीरिक हिंसा और भावनात्मक हिंसा। शारीरिक हिंसा वह है जो शरीर को कष्ट पहुंचाए। भावनात्मक हिंसा वह है जो मन और भावनाओं को चोट पहुंचाए। हिंसा को समझने के लिए हम उसे घर के भीतर होने वाली हिंसा और घर के बाहर होने वाली हिंसा को दो भागों में भी बांट सकते हैं।

यह बड़े आश्चर्य की बात लगती है कि घर के भीतर भी हिंसा होती है। घर और परिवार वह जगह समझी जाती है जहां हरेक को आराम मिलता है। प्यार और हिफ़ाजत मिलती है। अगर

सच्चाई देखें तो औरत के खिलाफ सबसे ज्यादा हिंसा उसके अपने घर में ही होती है। उसे करने वाले उसके अपने रिश्तेदार होते हैं।

हिंसा—कोख से कब्र तक

आजकल लड़की पैदा हो उससे पहले ही उसे मारने का इंतजाम कर लिया जाता है। दो-चार सौ रुपए खर्च कर के लोग पेट के बच्चे का लिंग मालूम कर लेते हैं। अगर गर्भ में बेटी है तो गर्भ गिरवा दिया जाता है। पिछले कुछ सालों में हजारों लड़कियों को पैदा होने से पहले ही मार दिया गया है। गर्भ जल की जांच कर के या गर्भ की तस्वीर खींच कर बच्चे के बारे में बहुत कुछ मालूम किया जा सकता है। विज्ञान की इस नई तकनीक का इस्तेमाल लड़कियों के ख़िलाफ किया जा रहा है।

आज भी देश के कुछ हिस्सों में बेटी के पैदा होते ही उसे ज़हर पिला देते हैं या और किसी तरीके से मार देते हैं। यह हिंसा करने वाले खुद उसके मां-बाप या बड़ी-बूढ़ी औरतें होती हैं।

बच्ची अगर जी भी गई तब भी उसे न पूरी देखभाल मिलती है, न पूरा खाना। ऐसी कमजोर

लड़कियां किसी भी बिमारी का शिकार हो कर मर जाती हैं। सर्वेक्षणों से मालूम हुआ है कि अलग अलग उम्र के बच्चों में लड़कियां ज्यादा कमजोर और बीमार होती हैं।

घर के अंदर उनके साथ होने वाली मार-पीट, गालियां और अपमान तो आम बात है लेकिन उनका यौन शोषण भी कम नहीं। छोटी लड़कियों के साथ उनके अपने चाचा, मामा, भाई यहां तक कि बाप और दादा भी बलात्कार करते पाए गए हैं। ऐसी खबरें आमतौर पर छिपा दी जाती हैं। आजकल बहुत से महिला समूह इस हिंसा के बारे में जानकारी इकट्ठा कर रहे हैं।

जल्दी, छोटी उम्र में शादी और बच्चों का बोझ डाल देना भी लड़की के साथ हिंसा है। उससे उसका बचपन छीन लेना, उसकी हंसी-खुशी, खेलना-कूदना सब पर रोक लगाना हिंसा नहीं तो और क्या है?

ब्याह कर ससुराल गई तो वहां भी हिंसा का संसार फलता-फूलता है। बात-बात पर पत्नी पर हाथ उठा देना पति अपना हक़ समझते हैं। एक तरह से समाज भी उन्हें यह हक़ देता है। अगर कोई पति अपनी पत्नी को कितना मारे-पीटे, सताए कोई उसे बचाने नहीं जाता। इसे अपराध नहीं, घरेलू मामला कह कर आंख बंद कर लेते हैं।

दहेज के लिए उसे जला दिया जाता है या सता-सता कर आत्महत्या के लिए मजबूर कर दिया जाता है। लड़कियों को खरीद-बेच कर जबरदस्ती वैश्या बना दिया जाता है। विधवा होने पर उसे जिंदा चिता पर बैठाने वाले या वृंदावन-

कोई फ़र्क नहीं बलात्कार होने
और पक्की सीढ़ियों से नीचे धकेले जाने में
सिवा इसके कि घाव मन के भीतर भी
रिसते हैं।

कोई फ़र्क नहीं बलात्कार होने
और ट्रक तले कुचले जाने में
सिवा इसके कि मर्द पूछते हैं—
'मज़ा आया था?'

कोई फ़र्क नहीं बलात्कार होने
और फुफकारते सांप के काटने में
सिवा इसके कि लोग जानना चाहते हैं—
'तुम अकेली बाहर गई ही क्यों?'

कोई फ़र्क नहीं बलात्कार होने
और कार दुर्घटना में टूटे शीशे से
उछल कर बाहर गिरने में
सिवा इसके कि बाद में कारों से डर नहीं लगता
डर लगने लगता है आधी मानव जाति से।

(अंग्रेजी से अनुदित)

मथुरा में भीख मांगने के लिए मजबूर करने वाले भी ज्यादातर सगे-संबंधी ही होते हैं।

विचार करने की बात

आज इस बात पर सोचना चाहिए कि परिवार किसे कहते हैं? परिवार कैसा होना चाहिए? क्या औरत के सुख और सुरक्षा की जिम्मेदारी परिवार की नहीं जिनके लिए वह अपना तन और मन दे देती है?

"घर घर में शमशान घाट हैं
घर घर में फांसी घर हैं
घर घर में दीवारें हैं
दीवारों से टकरा कर
गिरती है वह
गिरती है आधी दुनिया
सारी मनुष्यता गिरती है।"

वीणा शिवपुरी